ओम् शान्ति

29–9–2014 ओआरसी (दिल्ली)

ओआरसी के ट्रेनिंग सेन्टर के बोर्ड रूम में ओआरसी निवासी भाई –बहनों के साथ परम आदरणीया गुल्ज़ार दादी जी की रूह–रिहान

हम सभी एक दूसरे को देख खुश होते हैं क्यूँ? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इण्डिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सिकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठे और उन्हें ज़रा भी दुःख न हो। इतना ख़्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सरेण्डर बच्चों से विशेष प्यार है। सरेण्डर बच्चों को देख बाबा को बहुत अच्छा लगता है कि इन्होंने हिम्मत से ख़ुद को बनाया है। बाबा का बच्चों के लिए एक–एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दुःख न हो। एक–2 बच्चे से बाबा को बहुत प्यार है। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। बाबा ने हमें अपना बनाया, सुख शान्ति तो है। मैं कहती हूँ बाबा ने बच्चों के लिए क्या–2 बनाकर दिया है जिससे बच्चों को दुःख न हो। अगर कोई बीमार भी होता था तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है। प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता। स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना क्या बड़ी बात है। बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह! बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनायें हैं। सुबह से लेकर रात तक जो भी दिनचर्या बीतती है उसमें कितने अथाह सुख के साधन हैं। हम जब यहॉ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिए थे। फिर सेवा में लग गए, सेवा में तो अपने–2 ढ़ंग के स्थान होते हैं। लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के

साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है– वाह मेरे भाई –बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भले दूसरों के सहयोग से बना है, लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम–कदम पर वाह बाबा वाह का अनुभव करते रहो। वैसे तो साधन सेन्टर्स पर भी होते हैं, पर यहॉ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहॉ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए। जैसी बाबा अभी आपकी पालना कर रहा है ऐसी पालना सतयुग में राजकुमार और राजकुमारियों की भी नहीं होती। इतना नशा है? आप जैसे भाग्यवान और कहीं नहीं हैं, क्योंकि सिकीलधे हो ना। एक –2 को बाबा ने चुनकर इकट्ठा किया है, किसी को ईस्ट से और किसी को वेस्ट से, अभी सभी मिलकर एक हो गए हैं। अभी आपका पार्ट ओआरसी में है। हमें तो बाबा ने छोटेपन में इतनी अच्छी पालना दी लेकिन आपको तो बड़ों को इतनी अच्छी पालना मिल रही है। बाबा ने आपको तन, मन और धन तीनों सुख के साधन दिये हैं। संसार में जो रॉयल लोग होते हैं उन्हें सिर्फ तन का सुख होगा मन का नहीं। हमें तो सारे सुख हैं। चेक करो कि हम खुशी में रहते हैं या बातों में? क्योंकि संगठन में बातें तो आयेंगी हमें भी अनुभव है।संगठन में एक दो के गुण देख उमंग–उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। देखो, आज संगठन में कितनी रॉयल रीति से बैठे हो, सतयुग भी इसके आगे कुछ नहीं। जो अन्तर का सुख यहॉ है वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं नहीं मिलती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव–स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनियां में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहॉ खुशी के बिना और है ही क्या। अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब–किताब संगठन में चुक्तु हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का

खज़ाना देता है, कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहॉ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता है, और जब एक साथ खाते–पीते हैं तो घर लगता है, यहां दोनों भासना आती हैं। भगवान सहज बाप के रूप में मिल जायेगा कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें इतने बड़े संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहां जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिंचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुमः रहना है बातों से नहीं डरना। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो ये बातें कुछ भी नहीं लगेंगी, संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है, लेकिन आप तो बड़े ऐसी पालना के पात्र हो।

आदरणीया दादी जी के साथ प्रश्नोत्तर

प्रश्न–दादी जी हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन पढ़ाई हैं, सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें ?

उत्तर–जो हमारे चारों सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरू–शुरू में बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग–उत्साह रहता है, लेकिन धीरे–धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं, और पेपर के टाइम सोचते हैं क्या होगा, कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह–2 मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेजेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेजेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है यही नशा और ख़शी हो।

प्रश्न–दादी जी परचिन्तन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तर–जब भी समय मिले बीच–बीच में मुरली का मंथन करो। परचिन्तन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचिन्तन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइम टेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी। मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बनो। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम बनाओ। अपनी कमज़ोरी को जान अपनी मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्न–दादी जी चलते–2 ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है क्या यह ठीक है?

उत्तर–संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो के उमंग से आगे बढ़ने के लिए ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमज़ोरी वालों को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्न–दादी जी हिसाब–किताब बन रहा है या चुक्तु हो रहा है उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर–अगर चुक्तु हो रहा है तो संतुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्न–दादी जी सेवा का लक्ष्य क्या है?

उत्तर–सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग उत्साह में लाना है बीच में छोड़ नहीं देना है। ओम् शान्ति!